Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

धन

तिणनें राजा खोसे के घरे गिले,
तसकर लगे के लाय।
कृपण नें कापुरुष री खाटवां,
माल मस्करा खाय।

राजा बलात् ले लेता है। घर में पड़ा-पड़ा नष्ट हो जाता है। चोर चुरा लेता है। कभी-कभी आग जला डालती है। कृपण और कापुरुष मुश्किल से कमाते हैं। और माल कोई दूसरा खा जाता है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली | ● वर्ष 27 ● अंक 03 ● 20 अक्टूबर - 26 अक्टूबर, 2025 | प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 18-10-2025 ● पेज 12 | ₹ 10 रुपये

अहिंसा और समता की भावना का हो विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

संवर और निर्जरा से संभव है मोक्ष: आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

आसक्ति के धागे को तोड़ने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी एवं साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी को उनके दीक्षा दिवस के संदर्भ में मिला मंगल आशीष

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के सत्र 2025-27 के पदाधिकारियों आदि ने किया शपथ ग्रहण

कोबा, गांधीनगर।

12 अक्टूबर, 2025

अध्यात्म जगत के महासूर्य जन-जन के हृदय हार युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के माध्यम से अपने मंगल प्रवचन में फरमाया कि मनुष्य शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श जैसे भौतिक विषयों में आसक्त रहता है। यही आसक्ति मनुष्य के जीवन में दुःख का मूल कारण बन जाती है।

आचार्यश्री ने कहा कि दुःख दो प्रकार के होते हैं – मानसिक और शारीरिक। अनेक बार शारीरिक पीड़ा का कारण भी आसक्ति ही बनती है। व्यक्ति स्वाद, आकर्षण और आसक्ति के वशीभूत होकर चिकित्सकीय निषेध के बावजूद अनुचित आहार ग्रहण करता है, जिससे शरीर में विकार उत्पन्न होते हैं। यह आसक्ति केवल मनुष्य तक सीमित नहीं, देवगति में भी दुःख का कारण बन सकती है।

आचार्यप्रवर ने प्रेरणा दी कि हमें अपने जीवन में आसक्ति को कम करने का प्रयास करना चाहिए। कर्तव्य का निर्वहन तो आवश्यक है, परंतु उसमें मोह या आसक्ति नहीं होनी चाहिए। पदार्थों का उपयोग आवश्यकता अनुसार करें, आसक्ति न रखें। उन्होंने कहा, 'आसक्ति और उपयोग में सूक्ष्म किंतु महत्वपूर्ण भेद है। व्यक्ति को 'वॉण्ट' और 'नीड' के बीच एक रेखा खींचनी चाहिए।'

साधना और व्यवहार दोनों क्षेत्रों में इच्छाओं का परिसीमन रखने का आह्वान करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ है, इसका सदुपयोग धर्म की आराधना में होना चाहिए। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप की आराधना के माध्यम से ही मोक्ष रूपी मंजिल प्राप्त की जा सकती है। हमारा आसक्ति का धागा टूटे और हम अनासक्त भावों में रहें, यही जीवन की समाधि है।

मंगल प्रवचन के पश्चात साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि प्रयत्नशील और पुरुषार्थी व्यक्ति सदैव उन्नति को प्राप्त करता है। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो कर्मठ और शक्तिशाली होते हैं।

भगवान महावीर के भगवती सूत्र का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि 'जो शक्ति संपन्न होता है, वही विजय प्राप्त करता है।'

(शेष पेज 9 पर)

दुःख और भय से मुक्ति के लिए अहिंसक चेतना का करें निर्माण : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।

10 अक्टूबर, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, वीतराग कल्प महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो आगम' के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आकाश अनंत है — जिसका न कोई प्रारंभिक बिंदु है और न कोई अंतिम छोर। आकाश दो प्रकार का होता है — लोकाकाश और अलोकाकाश।

उन्होंने कहा कि अनंत आकाश के बीच में एक छोटा-सा भाग लोकाकाश है। यदि समस्त आकाश को समुद्र माना जाए तो लोकाकाश उसमें एक बूंद के समान है। जितने भी प्राणी, जीव, सिद्ध भगवान, चांद-सूर्य, ग्रह-नक्षत्र आदि हैं, वे सब लोकाकाश में स्थित हैं। जबकि अलोकाकाश में न जीव हैं, न प्रकाश, न जल, न पवन — केवल शून्य आकाश है। आचार्यश्री ने आगे कहा कि शास्त्रों में कहा गया है — लोक में महान भय है। दुःख और भय दोनों इसी लोक में निवास करते हैं।

(शेष पेज 9 पर)

नव मनोनयन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने मांडोत

चिताम्बा (राजस्थान) निवासी स्व. हीरालाल जी मांडोत एवं श्रीमती सुशीला बाई मांडोत के सुपुत्र, आईटी सिटी बैंगलोर में जन्मे पवन मांडोत अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के 59वें राष्ट्रीय अधिवेशन में सत्र 2025-27 के अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किए गए। बायोटेक्नोलॉजी में बीएससी धारक श्री मांडोत ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से नेगोशिएशन मास्टरी में सर्टिफाइड है। आपके माता-पिता ने आपको धर्मसंघ में किशोर मंडल से जोड़ा। आप तेरापंथ किशोर मंडल में सह-संयोजक, संयोजक एवं प्रभारी के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर में सन् 2020-21 के अपने अध्यक्षीय काल में आपने 1 आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, 11 आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र आदि अनेक आयामों का कुशलतापूर्वक संचालन किया। आपके इस कार्यकाल हेतु परिषद् को श्रेष्ठ परिषद् अलंकरण भी प्राप्त हुआ।आपके बड़े भाई अरविंद मांडोत सीपीएस के राष्ट्रीय मुख्य प्रशिक्षक एवं उपासक हैं, तथा हिम्मत मांडोत तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में धर्मसंघ में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आपने सन् 2017-19 में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के संगठन मंत्री, सन् 2021-23 में महामंत्री तथा सन् 2023-25 में उपाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं। आप तपस्या, स्वाध्याय एवं जप आदि में भी रुचि रखते हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार आपके सफल कार्यकाल की मंगलकामना करता है।

सम्यक्त्व से बड़ा नहीं है कोई रत्न : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
08 अक्टूबर, 2025

महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि कई प्राणी अंधकार में रहते हैं और वे अंधे होते हैं। जो अंधकार में रहते हैं, वे आंखें होते हुए भी एक प्रकार से अंधे हैं। यह बाहरी अंधकार है और बाहर का अंधापन है। भीतर का अंधकार और भीतर का अंधापन क्या है? किसी जीव में मिथ्यात्व होना, मिथ्या दृष्टिकोण होना भीतर का अंधकार होता है — यह महा अंधकार है। दुनिया में अनंत-अनंत प्राणी इस मिथ्यात्व के अंधकार से अंधे बने हुए हैं। अव्यवहार राशि में, वनस्पति काय में, बादर निगोद में जितने भी जीव हैं, जो मिथ्यात्व युक्त हैं, वे इस अर्थ में अंधे हैं। और भी अनेक जीव हैं, जिनमें मिथ्यात्व का योग है, मिथ्यादर्शन मोहनीय का उदय है और सघनता है — वे सारे प्राणी अंधे होते हैं। यह अंधापन दूर होना चाहिए।

बाहरी ज्योति का भी अपना महत्त्व है। जो व्यक्ति जन्मांध है, जिसे दिखाई नहीं देता, तो उसे दुनिया दिखाई नहीं देती। यदि उसे आंखें आ जाएं, ज्योति मिल जाए तो उसे कितना कुछ दिखाई दे सकता है। जो व्यक्ति धर्म, कर्म, हिंसा-अहिंसा, आठ कर्म, इहलोक-परलोक, पूर्वजन्म-पुनर्जन्म, पुण्य-पाप कुछ नहीं समझता, मिथ्यात्व से अभिभूत है, वह व्यक्ति भीतर से अंधा होता है।

'पांच आश्रवों में सबसे बड़ा आश्रव मानो मिथ्यात्व आश्रव है। कितने जीव ऐसे हैं जो अनादिकाल से मिथ्यात्व की गिरफ्त में हैं — उन्हें सम्यक्त्व आएगा ही नहीं। कई जीवों में पहले सम्यक्त्व नहीं था, बाद में सम्यक् दृष्टि प्राप्त हुई। सबसे बड़ा आश्रव मिथ्यात्व आश्रव प्रतीत हो रहा है। पांच आश्रवों को 1, 2, 3, 4, 5 संख्या मानें तो जीव के परिणामों से एक मिथ्यात्व हट जाता है, तो आश्रवों से 10,000 का भार कम हो जाता है। इसी प्रकार अव्रत आश्रव हटने से 2,000 का भार कम होता है और जीव छठे गुणस्थान में आ जाता है। प्रमाद आश्रव के छूटने से 300 का भार कम होता है और सातवां गुणस्थान प्राप्त हो जाता है। केवल 45 का भार शेष रहता है। कषाय आश्रव खत्म हो गया, बारहवां गुणस्थान आ गया, 40 का भार और कम होकर 5 शेष रहते हैं। चौदहवां गुणस्थान आने पर शुभ योग आश्रव भी नहीं रहता और आश्रव बिल्कुल समाप्त हो जाता है। चौदहवां गुणस्थान सम्पूर्ण संवर और संपूर्णतया अनाश्रव की स्थिति है। शुभ योग आश्रव तो तेरहवें गुणस्थान वाले केवलज्ञानी महामुनि के भी होता रहता है।'

मिथ्यात्व दूर हो और हम सम्यक्त्व को प्राप्त हों। सम्यक्त्व से बड़ा दूसरा कोई रत्न नहीं है, कोई बड़ा मित्र नहीं है। अतः मिथ्यात्व आश्रव और अन्य भी आश्रव निरुद्ध हो जाएं, तो आत्मा मोक्ष की ओर अग्रसर हो जाती है। सम्यक् दृष्टि जीव की दृष्टि परमात्मा पर टिकी होती है, जबकि मिथ्या दृष्टि की दृष्टि भौतिकता पर टिकी हो सकती है। गृहस्थ हैं और दृष्टिकोण सम्यक् बन जाए, तो यथासंभव साधना करते-करते मोक्ष के बहुत निकट पहुंच सकते हैं। सम्यक् दृष्टि है और साथ में साधना भी हो, तो जीव एकाभवातारी — अर्थात एक भव के बाद मोक्ष जाने वाला — भी बन सकता है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरांत जैन विश्व भारती द्वारा 'पद्मपुष्प' — 'शासनश्री' साध्वी श्री पद्मावती जी का जीवनवृत्त, साध्वी गवेषणाश्रीजी व साध्वी मयंकप्रभाजी द्वारा रचित पुस्तक — को आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया गया। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने मंगल प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती द्वारा जय तुलसी विद्या पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें वर्ष 2025 का पुरस्कार एस. डी. जैन मॉडर्न स्कूल, सूरत को प्रदान किया गया। प्रायोजक परिवार की ओर से विजयसिंह सेठिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। स्कूल संस्थान की ओर से ललित दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस उपक्रम का संचालन जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा ने किया।

अहिंसा और समता की भावना का हो विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
09 अक्टूबर, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो आगम' के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि संसारी जीवों को छह प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है— एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और केवल ज्ञानियों के लिए अनीन्द्रिय। क्षयोपशम भाव से जो इन्द्रियां कार्य करती हैं, वे केवल ज्ञानियों में नहीं होतीं; उनमें केवल द्रव्य रूप में इन्द्रियां रहती हैं। केवल ज्ञानी मन से भी ऊपर उठ चुके होते हैं, अतः उन्हें नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी कहा जाता है।

आचार्यश्री ने बताया कि जन्म की दृष्टि से प्राणी पाँच प्रकार के होते हैं। एकेन्द्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय प्राणी तिर्यंच गति में होते हैं, जबकि नरक, मनुष्य और देव गति में केवल पंचेन्द्रिय प्राणी ही पाए जाते हैं। पंचेन्द्रिय प्राणी तिर्यंच गति में भी विद्यमान होते हैं।

आचार्य श्री ने कहा कि शास्त्रों में उल्लेख है— प्राणी दूसरे प्राणियों को कष्ट देते हैं। मनुष्य भी मनुष्य को कष्ट दे सकता है— मारपीट, हत्या आदि के माध्यम से। मांसाहारी प्राणी पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा करते हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण अहिंसात्मक होना चाहिए। अनावश्यक किसी भी प्राणी को जानबूझकर पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि शरीर की बाहरी दृष्टि तो आंख है, परंतु भीतरी दृष्टि उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। जैन दर्शन में भीतरी दृष्टि के तीन प्रकार बताए गए हैं— सम्यक् दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और सम्यक्-मिथ्या दृष्टि। सम्यक् दृष्टि का होना आध्यात्मिक उन्नति का आधार है। उन्होंने कहा— 'संसार में अनेक प्रकार के प्राणी हैं। सबको अपने समान समझो। जैसे मुझे दुःख अप्रिय है, वैसे ही सबको दुःख अप्रिय है। मुझे सुख प्रिय है, वैसे ही सबको सुख प्रिय है। जब यह आत्मौपम्य की दृष्टि विकसित होती है, तब मनुष्य अहिंसा का सच्चा आसेवन कर सकता है।''

उन्होंने कहा कि हिंसा दुःख का कारण है और अहिंसा सुख-शांति का मार्ग। इसलिए व्यक्ति को अपने भीतर अहिंसा की चेतना और समता का भाव विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। अहिंसा की दृष्टि जाग्रत हो जाए तो जीवन सुदृष्ट हो सकता है।

प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए हमें अपने नकारात्मक भावों — क्रोध, मान, माया, लोभ, घृणा आदि — को त्यागना होगा। जब समता का भाव जागृत होता है, तब ये नकारात्मक प्रवृत्तियाँ आत्मा पर हावी नहीं हो पातीं।

प्रवचन के पश्चात अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा अलंकरण समारोह का आयोजन हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा और मंत्री अमित नाहटा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर वर्ष 2025 का युवा गौरव अलंकरण विजय सुराणा को, आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार नवीन बैंगानी को तथा आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार आई.पी.एस. राहुल जैन को प्रदान किया गया। इनके प्रशस्ति पत्रों का वाचन क्रमशः पवन मांडोत, भूपेश कोठारी और जयेश मेहता ने किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने आचार्यश्री के समक्ष कृतज्ञ भावों से आशीर्वाद प्राप्त किया।

वर्ल्ड बुक ऑफ लंदन के गुजरात अध्यक्ष डॉ. अश्विन त्रिवेदी ने अभातेयुप को नेत्रदान के संदर्भ में प्रमाण पत्र प्रदान किया।

अंत में बोरावड़ व्यवस्था समिति के श्रद्धालुओं द्वारा वर्ष 2026 के वर्धमान महोत्सव के लोगो और बैनर का अनावरण किया गया। आचार्यश्री ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आत्मशक्ति को जागृत करने का प्रभावी माध्यम है अनुष्ठान

यशवंतपुर।

साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में यशवंतपुर में नवरात्र आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन हुआ। साध्वी सोमयशा जी ने अपने प्रवचन में कहा – 'संसार में अनेक प्रकार की शक्तियों का महत्व है, परंतु सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के लिए व्यक्ति का शक्तिसंपन्न होना आवश्यक है। राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक अथवा किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए 'आत्मशक्ति' का होना अनिवार्य है।'

उन्होंने आगे कहा कि आत्मशक्ति को जागृत करने हेतु अनेक धार्मिक अनुष्ठान बताए गए हैं, जिनमें नवरात्र अनुष्ठान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बाह्य उपद्रवों से बचने तथा आत्मशक्ति को जागृत करने के लिए तप अनुष्ठान एक प्रभावी माध्यम है। जैन धर्म में आयंबिल तप का विशेष महत्व बताया गया है। इसमें स्वाद विजय और आहार संयम पर बल दिया जाता है।

एक समय, एक ही स्थान पर बैठकर विगयरहित, अलूण आहार लेना अपने आप में कठिन साधना है, किंतु साधक इसके द्वारा आत्मानंद का अनुभव करता है।

यशवंतपुर सभा भवन में आयोजित इस तप में सभा, युवक परिषद, महिला मंडल तथा ज्ञानशाला के बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। महिला मंडल से चंद्रा सिसोदिया एवं नीलम तातेड तथा सभा, परिषद से दिलीप पितलिया इस अनुष्ठान के संयोजक रहे। रात्रिकालीन अनुष्ठान में भी श्रद्धालुओं ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

साध्वी सोमयशा जी ने अनुष्ठान का अर्थ, उसके बीज मंत्रों तथा मंगल भावना के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. साध्वी सरलयशा जी ने 'अनुष्ठान से कैसे शक्तिशाली बनें' इस विषय पर अपने विचार एवं उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए। साध्वी ऋषिप्रभा जी ने तप के आध्यात्मिक एवं सांसारिक प्रभावों और लाभों के बारे में श्रद्धालुओं को अवगत कराया। मारवाड़ कांठा समाज के नवनिर्वाचित प्रथम संस्थापक अध्यक्ष गौतम मुथा का सम्मान कर उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित की गईं।

जय सिद्ध शक्ति अनुष्ठान का आयोजन

किलपॉक, चेन्नई।

शक्ति जागरण के महापर्व नवरात्रि के अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल, किलपॉक द्वारा जय सिद्ध शक्ति अनुष्ठान का आयोजन मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। अनुष्ठानकर्ताओं ने मुनि जयेश कुमार जी के साथ अनेक सिद्ध शक्ति जागरण मंत्रों का सामूहिक उच्चारण किया।

भिक्षु निलयम में अनुष्ठानकर्ताओं को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि जप शक्ति जागरण, विघ्न शमन और मनोबल के विकास का साधन है। जप शरीर, मन और विचार तंत्र को प्रभावित करता है। अनुष्ठान का प्रयोजन आत्मशक्ति का जागरण है। मुनिश्री ने कहा – मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है। मनोयोगपूर्वक जप करने से सारी शक्तियाँ जपकर्ता में धीरे-धीरे प्रकट होने लगती हैं। मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि भक्ति रस से भरी किसी भी पंक्ति को मंत्र बनाया जा सकता है। उस मंत्र को भावों से भावित कर दिया जाए तो उसकी शक्ति अपरिमित हो जाती है।

मंत्र में शब्द, भावना और प्रकंपन — इन तीनों का योग होता है। किताबों और ग्रंथों में हजारों मंत्र लिखे हैं, किंतु उन्हें मात्र पढ़कर आप अपना अभीष्ट सिद्ध नहीं कर सकते। विधिपूर्वक, अनुष्ठानपूर्वक, लयबद्ध उच्चारण के साथ उसमें भावना का पुट देना पड़ता है, तब कहीं जाकर उस मंत्र में प्राणशक्ति का संचार होता है। प्रकंपन जितना शक्तिशाली होगा, मंत्र उतना ही प्राणवान और कार्यकारी बनेगा। भावना उसे और अधिक प्रभावशाली बना देती है। इससे पूर्व मुनि भव्य कुमार जी ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का प्रयोग करवाया। कार्यक्रम की समायोजना में मंडल अध्यक्षा अनीता सुराणा, उनकी टीम तथा दिशा सकलेचा का सराहनीय योगदान रहा।

पावस में रचा तपस्या का कीर्तिमान

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में मुनि श्रेयांसकुमार जी के तप का वर्धापन उत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि कमलकुमार जी ने कहा — 'मुनि श्रेयांसकुमार जी मेरे सह-दीक्षित हैं। प्रथम बार गंगाशहर में साथ चातुर्मास करने का अवसर मिला। प्रारंभ में स्वास्थ्य अनुकूल न होने के बावजूद इन्होंने तप की झड़ी लगा दी। 5, 12, 13 उपवासों के पश्चात वर्षीतप प्रारंभ कर धर्मचक्र कंठीतप एवं 34 दिन की तपस्या से स्वयं को पूर्ण स्वस्थ बना लिया। चौपन वर्षीय संयम पर्याय में इतनी तपस्या मेरे प्रवास को धन्य कर गई।'

इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव के संदेश का वाचन किया गया। मुनि ज्ञानेन्द्रकुमार जी, मुनि रमेशकुमार जी, मुनि सुमतिकुमार जी आदि के प्रेरक उद्गारों का वाचन जतन संचेती एवं करणीदान रांका ने किया।

मुनि अजितकुमार जी एवं अन्य संतों के भक्ति गीत तथा साध्वी अनुशासनश्रीजी के गीत का गायक मंडली ने संगान किया।

मुनि श्रेयांसकुमार जी ने सभी संतों के सहयोग हेतु कृतज्ञता प्रकट की। मुनि विमलबिहारी जी, मुनि प्रबोधकुमार जी एवं मुनि नमिकुमार जी ने भी अनुमोदना की।

मुनि कमलकुमार जी ने आगे कहा कि 'आज मुनि नमिकुमार जी का जन्म का 76वां वर्ष प्रारंभ हो रहा है। उन्होंने भी गंगाशहर प्रवास में तपस्या का नया कीर्तिमान रचा है — 22, 23, 24, 39, 40 उपवासों के पश्चात अब 14 दिन की नई तपस्या आरंभ हुई है।'

भगवान महावीर थे मानवीय एकता के समर्थक

जयपुर।

मुनि तत्त्व रुचि जी तरुण ने कहा — भगवान महावीर मानवीय एकता के समर्थक थे। उन्होंने दलितों, वंचितों, पतितों और पीड़ितों का कल्याण किया। ये विचार मुनिश्री ने श्यामनगर स्थित भिक्षु साधना केंद्र में 'भगवान महावीर और विश्व मानव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने भगवान महावीर स्वामी के मानवीय एकता को दर्शाने वाले प्रेरक प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा — भगवान महावीर की दृष्टि में जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रांत और संप्रदाय भेद का कोई स्थान नहीं था। वे मानवीय एकता में विश्वास करते थे। उन्होंने अपने संघ में हर वर्ग के व्यक्ति को दीक्षित किया। उनके प्रथम शिष्य इंद्रभूति गौतम ब्राह्मण थे, प्रथम शिष्या चंदनबाला क्रीत दासी थी, और उनके प्रमुख दस श्रावकों में प्रथम श्रावक एक किसान था।

भगवान महावीर ने अपनी शरण में आए अर्जुन माली जैसे हत्यारे को भी तारा, चांडाल पुत्र हरिकेश बल को दीक्षित होने का अवसर दिया, और पाँच सौ चोरों के मुखिया प्रभव को भी सुधारा।

मुनि संभव कुमार जी ने कहा — व्यक्ति जन्म से नहीं, कर्म से महान होता है। हमारा जन्म चाहे जिस कुल में हुआ हो, हमारे आचरण पवित्र होने चाहिए। भगवान महावीर ने जातिवाद को अतात्विक बताया और कहा कि कोई भी व्यक्ति जाति और जन्म से नहीं, बल्कि सद्कर्म और सदाचार से महान बनता है।

प्रवचन से पूर्व आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन हुआ जिसमें श्रद्धालुओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

मंगल भावना समारोह

पीतमपुरा, नई दिल्ली।

मंगल भावना समारोह को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा— 'मैं आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार पीतमपुरा में चातुर्मास करने आई।

मैंने अनुभव किया कि भिक्षु चेतना वर्ष का यह चातुर्मास अनेकानेक उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। लगभग आठ कॉलोनियों के लोग प्रतिदिन प्रवचन का लाभ लेते रहे।

'ॐ भिक्षु' के सवा लाख जाप में 550 व्यक्तियों ने नाम दर्ज करवाए। 11 बार उपवास की बारी चली — तपस्या की झड़ी सी लग गई। रात्रि में पच्चीस बोल का अर्थ समझने के लिए बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती थी। अनेक संघ प्रभावक आयोजन भी संपन्न हुए। दो माह के इस प्रवास को सफल बनाने के लिए सभी का उत्कृष्ट प्रयास रहा। जो कुछ भी प्राप्त हुआ है, उसे सुरक्षित रखना आवश्यक है।' 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, मानसरोवर गार्डन सभा के अध्यक्ष नरेंद्र पारख, शालीमार बाग सभा की अध्यक्षा सज्जनबाई गिड़िया, तेरापंथ सभा पीतमपुरा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत भुतोड़िया, प्रवीण जैन, राकेश, ललित, तथा महिला मंडल की बहनों ने अपने भाव रखे। संचालन सभा मंत्री बीरेन्द्र जैन ने किया।

राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

गाजियाबाद।

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टैस्ट 2025 की राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता कोबा, अहमदाबाद में आयोजित हुई। जिसमें अणुव्रत समिति गाजियाबाद की प्लेटिनम वैली इंटरनेशनल स्कूल को ग्रुप सॉन्ग जूनियर और ग्रुप सॉन्ग सीनियर में देश भर में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। जूनियर सोलो सॉन्ग में भी DLF स्कूल को देश भर में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

अणुव्रत अधिवेशन में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सानिध्य में विजेता बच्चों को पुरस्कार दिया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
20 अक्टूबर - 26 अक्टूबर, 2025
हे प्रभो! यह तेरापंथ

पर्युषण महापर्व आराधना

किलपॉक, चेन्नई

पर्युषण का अर्थ – चारों ओर से सिमटकर एक स्थान पर अवस्थित होना, अर्थात् इन्द्रिय जगत से आत्मजगत में वास करना। जिसका फलितार्थ है – कषायों का उपशमन, भौतिक प्रवृत्तियों से अलगाव, आत्म साधना के लिए पुरुषार्थ, अतीत की स्खलनाओं, प्रमाद एवं भूलों का सिंहावलोकन। ये विचार मुनि मोहजीत कुमार जी ने भिक्षु निलयम के महाश्रमणम् सभागार में विशाल जनमेदिनी के समक्ष प्रकट किए।

पर्युषण महापर्व आराधना के प्रथम दिवस 'खाद्य संयम दिवस' पर मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि आहार जीवन की अनिवार्यता है। जो अनिवार्य है, उसका विवेक जरूरी है। तीर्थंकर जीवन दर्शन के अंतर्गत मुनि जयेश कुमार जी ने तीर्थ और तीर्थंकर की महत्ता पर विशेष प्रस्तुति दी। मुनि भव्य कुमार जी ने उत्तराध्ययन सूत्र के 'चित्त संभूति' प्रसंग को अपनी शैली में प्रस्तुत कर समां बाँधा। दूसरे दिन 'स्वाध्याय दिवस' पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म क्षय होते हैं। स्वाध्याय व्यक्ति को हेय, ज्ञेय, उपादेय का बोध कराता है। मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि स्वाध्याय का अर्थ सत् शास्त्रों के अध्ययन के साथ ही स्वयं अपना ज्ञान करना है। कुछ पढ़ने या सुनने के पश्चात उसकी अनुप्रेक्षा करने से मस्तिष्क में नए आइडियाज आते हैं और कल्पनाशक्ति का विकास होता है। तीर्थंकर जीवन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में मुनि जयेश कुमार जी ने भगवान ऋषभ द्वारा जीवन की विकासशील अवधारणा को आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया। मुनि भव्य कुमार जी ने उत्तराध्ययन सूत्र के 'चित्त संभूति' प्रसंग को सरस शैली में प्रस्तुत किया।

पर्युषण महापर्व की आराधना के तीसरे दिन 'सामायिक दिवस' के अवसर पर अभिनव सामायिक का प्रयोग मुनि भव्य कुमार जी द्वारा करवाया गया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने सामायिक शब्द का प्रतिपादन करते हुए कहा कि सामायिक संवर और शोधन की प्रक्रिया है। इस अवधि में क्रियात्मक पाप रुकता है और कृत पापों का शोधन होता है। मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि सामायिक आत्माराधना का महान पथ है। विकृति से संस्कृति की ओर गतिमान होने का अर्थ सामायिक है। तीर्थंकर दर्शन के अंतर्गत मुनि जयेश कुमार जी ने प्रभु सुमतिनाथ के जीवन चित्र को उकेरा।

'वाणी संयम दिवस' के अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार ने कहा कि भाषा का प्रयोग मानव-मानव में संबंध स्थापित करता है। बोलना एक कला है, परंतु मौन एक तप है। वाणी का संयम दीनता नहीं, साधना है। मधुर वाणी, सुसंस्कृत वाणी का श्रृंगार सारे संसार को अपनी ओर खींच लेता है। मुनि जयेश कुमार ने घटना प्रसंग के माध्यम से अयाचित वाणी के दुष्प्रभाव का चित्रण करते हुए कहा कि अभिमानी व्यक्ति सुनना नहीं, केवल बोलना चाहता है। तीर्थंकर दर्शन की कड़ी में मुनि जयेश कुमार जी ने 16वें प्रभु शांतिनाथ का जीवनवृत्त प्रस्तुत किया। मुनि भव्य कुमार ने आगम सूत्रों के माध्यम से वर्तमान के संदर्भ में सामाजिक और व्यावहारिक गतिविधियों पर सटीक टिप्पणी कर सामाजिक क्रियाकलापों के सुधार पर बल दिया।

व्रत की चेतना का जागरण स्वयं से जुड़ने की एक दिव्य प्रेरणा है। व्रत मन की तृप्ति का सर्वोत्तम उपाय है। व्रत व्यक्ति की जीवन शैली में संयम और अध्यात्म के प्रति आस्था का निर्माण करता है। ये स्वर मुनि मोहजीत कुमार जी ने 'व्रत चेतना दिवस' पर प्रकट किए। इस दिवस की पृष्ठभूमि को प्रकट करते हुए मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि व्रत का अर्थ है संयम। आज का मानव त्याग को नहीं, भोग को महत्व देता है। आवश्यकता है दो समय रोटी की, कुछेक वस्त्रों की, किंतु करोड़ों के संग्रह के लिए दिन-रात एक करता है। तीर्थंकर दर्शन के अंतर्गत मुनि जयेश कुमार जी ने 19वें प्रभु मल्लिनाथ की जीवन कथा का संक्षिप्त वर्णन किया। मुनि भव्य कुमार जी ने आगम सूक्तों की व्याख्या करते हुए जनजीवन को व्रत की संस्कृति को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के अंतर्गत 'जप दिवस' पर मुनि मोहजीत कुमार ने कहा कि जप शक्ति जागरण, विघ्नशमन और मनोबल के विकास का साधन है। जप शरीर, मन और विचार तंत्र को प्रभावित करता है। जप शब्द की मीमांसा करते हुए मुनि ने कहा – 'ज' से जन्म का विच्छेद और 'प' से पापों का नाश होता है। मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि भक्ति रस से भरी किसी भी पंक्ति को मंत्र बनाया जा सकता है। उस मंत्र को भावों से भावित कर दिया जाए तो उसकी शक्ति अपरिमित हो जाती है। तीर्थंकर दर्शन के अंतर्गत मुनि जयेश कुमारजी ने 22वें तीर्थंकर भगवान अरिष्टनेमि के जीवन प्रसंग को सरसता के साथ प्रस्तुत किया। मुनि भव्य कुमार जी ने उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित 'चित्त संभूति' के कथानक को प्रस्तुत किया। मुनि मोहजीत कुमार ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का प्रभावी वर्णन किया।

ध्यान का अर्थ – अपने आपको देखना; अपने शरीर, मन, भाव और आत्मा के सूक्ष्म स्पंदनों को केवल देखना और जानना। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस ध्यान की पद्धति को 'प्रेक्षाध्यान' की अभिधा से अभिहित किया। प्रेक्षाध्यान का उद्देश्य है – चित्त और मन की निर्मलता। ये विचार पर्युषण महापर्व आराधना के छठे दिन 'ध्यान दिवस' पर मुनि मोहजीत कुमार ने प्रकट किए। मुनि जयेश कुमार जी ध्यान की उपयोगिता समझाते हुए कहा कि आज का युग वैज्ञानिक युग है। वैज्ञानिक युग की विशेषता है कि कसौटी और परीक्षण के बाद ही किसी सच्चाई को स्वीकार किया जाता है। ध्यान एक ऐसा प्रयोग है जो धर्म के क्षेत्र में अन्वेषण को स्थान देता है। केवल इंद्रियों के स्तर पर धर्म को नहीं समझा जा सकता; उसे समझने के लिए अतींद्रिय चेतना के स्तर पर जाना होता है। तीर्थंकर दर्शन के अंतर्गत मुनि जयेश कुमार जी ने तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवनवृत्त के गूढ़ रहस्यों को प्रकट किया। मुनि भव्य कुमार जी ने उत्तराध्ययन सूत्र के 'चित्त संभूति' प्रसंग को सरसता से प्रस्तुत किया। मुनि मोहजीत कुमार ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा को 26वें भव तक कर्मों के उतार-चढ़ाव का वर्णन कर जनमानस को संबोध प्रदान किया। इस अवसर पर तपस्या के क्रम में 50 से अधिक जनों ने बड़ी तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

जैन धर्म का सर्वोच्च महान पर्व 'संवत्सरी' त्याग, तप, आराधना के भावों से भावित है। यह मन की पवित्रता और अतीत के प्रतिलेखन का महान दिन है। इस आध्यात्मिक पर्व पर व्यक्ति आत्मकेन्द्रित होकर अतीत की भूलों का सिंहावलोकन करता है। ये विचार मुनि मोहजीत कुमार जी ने पर्युषण पर्व आराधकों के मध्य कहे। संवत्सरी महापर्व का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सस्वर संगान से हुआ। मुनि भव्य कुमार जी ने 'चित्त संभूति' के रोमांचक सफर को पूर्णाहुति दी। मुनि जयेश कुमार जी ने संवत्सरी को शाब्दिक परिभाषा देते हुए कहा कि 'वत्सर' का अर्थ है वर्ष, और सम्पूर्ण वर्ष को एक दिन में समेटने का नाम है संवत्सरी। व्यक्ति सोचता है, एक दिन सारा धर्म-ध्यान करके मैं पूरे साल की भरपाई कर लूँ, पर जीवन के हर क्रम में निरंतरता आवश्यक होती है। आत्मचिंतन करें कि अब तक मैंने क्या हासिल किया और क्या करना शेष है? फिर संकल्पित हो शेष को अशेष बनाने की दिशा में कदम बढ़ा दें। मुनि मोहजीत कुमार जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के परिप्रेक्ष्य में जन्म, साधना, परिषहों के वर्णन के साथ उत्तरवर्ती आचार्य जम्बूस्वामी की गेय कथा को प्रस्तुत कर संयम की भावना को जागृत किया। मुनि भव्य कुमार जी ने आगम युग, उत्कर्ष युग और नवीन युग के आचार्यों के जीवन प्रसंगों को प्रकट किया। मुनि जयेश कुमार जी ने संवत्सरीक प्रवचन क्रम का उपसंहार करते हुए तेरापंथ के 11 आचार्यों का संक्षिप्त जीवनवृत्त प्रस्तुत किया। संवत्सरी महापर्व के दिन साढ़े नौ घंटे चले प्रवचन क्रम को तीनों संतों ने पूर्ण किया। इस अवसर पर हजारों उपवास के साथ सैकड़ों पौषध हुए। बड़ी तपस्या की संख्या भी उत्कृष्ट रही।

सर्वधर्म सद्भाव सम्मेलन का आयोजन

जयपुर।

श्याम नगर स्थित भिक्षु साधना केंद्र में अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा अणुव्रत सप्ताह के अंतर्गत मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' के सान्निध्य में सर्वधर्म सद्भाव सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में सिख धर्म से सरदार जसवीर सिंह (पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग), आर्य समाज से टी. सी. राहुल (पूर्व जज, राजस्थान हाई कोर्ट), बौद्ध धर्म से रामावतार (जिला अध्यक्ष, बौद्ध संघ), ईसाई धर्म से फादर विजय पॉल (चर्च चैरिटी), इस्लाम धर्म से शाकिब उस्मानी (चीफ काज़ी परिवार) एवं बौद्ध संघ से प्रज्ञामित्र बौद्धाचार्य (प्रदेश अध्यक्ष, बौद्ध संघ, राजस्थान) सहित अनेक विशिष्ट जन उपस्थित थे।

इस अवसर पर सभी धर्मावलंबियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए एकता, भाईचारा और मानवता के संदेश पर विशेष बल दिया। मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने कहा— 'हम सबका एक ही धर्म है — मानव धर्म। हम सबकी एक ही जाति है — मनुष्य जाति। अणुव्रत मानव धर्म है, जिसका मुख्य ध्येय समाज में शांति, सद्भावना और नैतिकता की स्थापना करना है।' उन्होंने सुमधुर गीत 'इंसान हम बनेंगे, संकल्प एक ही हो' के माध्यम से समाज को एकता और सद्भावना का संदेश दिया।

अणुव्रत समिति, जयपुर के अध्यक्ष विनोद कुमार बैद ने अणुव्रत आचार संहिता की शपथ दिलाते हुए सबको अणुव्रत के पथ पर चलने की प्रेरणा दी तथा समागत अतिथियों को दुपट्टा ओढ़ाकर एवं साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। शुभारंभ अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष विमल गोलछा के स्वागत भाषण से हुआ। संजय बेदऔर मंत्री जयश्री सिद्धा ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। तेरापंथ महिला मंडल (सी-स्कीम) की अध्यक्षा कनक आंचलिया, महिला मंडल (शहर) अध्यक्षा कौशल्या जैन आदि बहनों ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष संपन्नता समारोह का आयोजन

दिल्ली।

बहुश्रुत परिषद के सम्मानित सदस्य मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष संपन्नता समारोह का भव्य आयोजन ओसवाल भवन, शाहदरा (दिल्ली) में हुआ।

मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान को जीवन विकास और निर्जरा का साधन बताते हुए प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग करवाया तथा नियमित रूप से ऐसे प्रयोग करने की प्रेरणा दी। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने स्वागत भाषण देते हुए प्रेक्षाध्यान की महत्ता को रेखांकित किया। इस अवसर पर सभी ने प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा पचास वर्ष पूर्व प्रदत्त इस अवदान को संपूर्ण मानवता के लिए हितकारी बताया। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया तथा दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षिका राज गुनेचा ने किया। आयोजन में शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी का विशेष सहयोग रहा। अणुव्रत समिति दिल्ली के अध्यक्ष ने भी प्रासंगिक विचार रखे। अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

'Mock Stock Event' का हुआ आयोजन

किलपॉक, चेन्नई।

शेयर बाजार की रणनीति और व्यापारिक निर्णय क्षमता को समझने हेतु तेरापंथ युवक परिषद, किलपॉक के तत्वावधान में 'Bull vs Bear' मॉक स्टॉक ट्रेडिंग इवेंट का आयोजन हुआ। इस संयुक्त आयोजन में तेरापंथ किशोर मंडल, किलपॉक एवं दक्षिण मुंबई के 47 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मुनि जयेशकुमार जी ने कहा — 'युवा पीढ़ी को धार्मिक चेतना के साथ व्यावहारिक जीवन की समझ भी आवश्यक है। व्यापार में नैतिकता और विवेक का समन्वय ही सफलता का सूत्र है।' इवेंट में प्रतिभागियों ने लाइव समाचारों के आधार पर अपनी निवेश रणनीतियाँ बनाईं। 9 कंपनियों के शेयरों की कीमतें वास्तविक समय में बदलती रहीं, जिससे प्रतिभागियों को असली ट्रेडिंग माहौल का अनुभव मिला।

कार्यक्रम संयोजक हर्ष डूंगरवाल ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं में वित्तीय साक्षरता, निर्णय क्षमता और त्वरित सोच का विकास करना था। अंत में दो श्रेष्ठ प्रतिभागियों को 'बाजार का बादशाह' घोषित कर सम्मानित किया गया। आयोजन में मुम्बई से तन्मय, हर्ष, कौशिक, मुदित, दिशांत आदि किशोरों का विशेष योगदान रहा।

आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी पर महाजप अनुष्ठान

आमेट।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल आमेट द्वारा 'ॐ भिक्षु महाजप अनुष्ठान' का आयोजन साध्वी सम्यकप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अंतर्गत देशभर में महिला मंडल द्वारा सुख, शांति, अमन एवं चैन के लिए यह विश्वस्तरीय जप अनुष्ठान किया गया। श्रावक समाज ने एकाग्रता एवं लयबद्धता से जप कर इस साधना में भाग लिया।

साध्वी सम्यकप्रभाजी ने महिला मंडल के इस अनुकरणीय कार्य की सराहना की। महिला मंडल मंत्री संगीता चंडालिया ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता एवं श्रावक समाज के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में सभी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं ज्ञानशाला के नन्हे बच्चे भी उपस्थित रहे। लगभग 150 श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता से अनुष्ठान अत्यंत सफल रहा।

ओम भिक्षु जप अनुष्ठान का आयोजन

जयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के आह्वान पर भिक्षु चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में देशभर में विश्व शांति एवं आत्मशक्ति के लिए 'ओम भिक्षु जप अनुष्ठान' का आयोजन किया गया। इसी क्रम में जयपुर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा जयाचार्य की छतरी, रामनिवास बाग में भव्य जप अनुष्ठान संपन्न हुआ। कार्यक्रम में केसरिया बाने में सुसज्जित महिला मंडल सदस्याएँ समय से पूर्व ही अपने आराध्य के जप अनुष्ठान में सहभागी बनने पहुंच गईं।

छतरी का दृश्य अत्यंत मनोहर था। जो सदस्याएँ प्रत्यक्ष रूप से नहीं पहुँच सकीं, उन्होंने Zoom के माध्यम से भक्ति में जुड़कर वातावरण को और भी भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम स्थल पर शहर महिला मंडल अध्यक्ष कौशल्या जैन, मंत्री पायल जैन, सी स्कीम अध्यक्ष एवं मंत्री अपनी टीम सहित उपस्थित थीं। सभी ने सामूहिक सामायिक साधना की और 'ओम भिक्षु जप' के नाद से वातावरण को गुंजायमान कर दिया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

डोंबिवली। रतननगर निवासी डोंबिवली प्रवासी अनिल हीरावत के सुपुत्र ऋषभ एवं पुत्रवधू अश्विनी हीरावत का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से मेलबोर्न (ऑस्ट्रेलिया) में सम्पन्न हुआ। संस्कारक राजकुमार हीरावत ने Zoom Meeting के माध्यम से संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

महिला सम्मेलन कार्यक्रम आयोजित

'नारी विकास की पर्याय है जागरूकता'

भीनासर।

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, भीनासर के प्रांगण में 'नारी शक्ति का जागरण' विषयक महिला सम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। स्थानीय महिला मंडल की बहनों ने संकल्प गीत का संगान किया। मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की नव-निर्वाचित कोषाध्यक्ष ममता रांका एवं कार्यकारिणी सदस्या सुप्रिया राखेचा उपस्थित रहीं।

साध्वी जिनबाला जी ने अपने उद्बोधन में कहा— 'जैसे जामवन्त ने हनुमान जी की सुप्त शक्ति को जगाया, वैसे ही नारी की शक्ति को भी एक बार जागृत होना चाहिए। आचार्य श्री तुलसी ने महिलाओं के विकास के लिए जो प्रयास किए, उसी का परिणाम है कि आज तेरापंथ समाज की महिलाएं युग के साथ आगे बढ़ रही हैं।' उन्होंने 3C फार्मूला को समझाते हुए कहा— Challenge: हर चुनौती को दृढ़ता से स्वीकार करें। Control: इच्छाओं व भावनाओं पर नियंत्रण रखें। Cooperation: एक-दूसरे की भावनाओं को समझकर सहयोग करें।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने कहा कि हर व्यक्ति शक्तिशाली है, बस अपनी शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है। साध्वी भव्यप्रभा जी ने कहा कि सहनशीलता नारी की सबसे बड़ी शक्ति है, जिसे जागृत कर वह अपने परिवार को स्वर्ग बना सकती है।

यू.आई.टी. के पूर्व चेयरमैन एवं शक्तिपीठ ट्रस्टी महावीर रांका ने कहा— 'सफलता के लिए देव, गुरु और धर्म की शक्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।' ममता रांका ने कहा— 'नारी विकास के लिए पीढ़ियों के बीच तालमेल आवश्यक है तथा परिवार का सहयोग अनिवार्य है।' सुप्रिया राखेचा ने कहा— 'शक्ति हमारे अंतर में निहित है, बस उसे जगाने की जरूरत है।'

महिला मंडल की बहनों ने स्वागत संगान प्रस्तुत किया तथा युवतियों ने महिला सम्मेलन एयरवेज कार्यक्रम की आकर्षक प्रस्तुति दी।

अध्यक्षा शशि गोलछा ने स्वागत भाषण दिया और मंत्री प्रमिला सेठिया ने आभार व्यक्त किया। साध्वी वृंद ने 'नारी शक्ति' पर सामूहिक संगान किया। भीनासर महिला मंडल द्वारा राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ममता रांका एवं सुप्रिया राखेचा का मोमेंटो एवं साहित्य भेंट कर स्वागत किया गया।

मनाली सेठिया और श्वेता सेठिया ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। कार्यक्रम में लगभग 200 भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

तप अनुमोदना का हुआ आयोजन

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में मुनि श्रेयांसकुमार जी के तप का वर्धापन उत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि कमलकुमार जी ने कहा — 'मुनि श्रेयांसकुमार जी मेरे सह-दीक्षित हैं। प्रथम बार गंगाशहर में साथ चातुर्मास करने का अवसर मिला। प्रारंभ में स्वास्थ्य अनुकूल न होने के बावजूद इन्होंने तप की झड़ी लगा दी। 5, 12, 13 उपवासों के पश्चात वर्षीतप प्रारंभ कर धर्मचक्र कंठीतप एवं 34 दिन की तपस्या से स्वयं को पूर्ण स्वस्थ बना लिया। चौपन वर्षीय संयम पर्याय में इतनी तपस्या मेरे प्रवास को धन्य कर गई।' इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव के संदेश का वाचन किया गया। मुनि ज्ञानेन्द्रकुमार जी, मुनि रमेशकुमार जी, मुनि सुमतिकुमार जी आदि के उद्गारों का वाचन जतन संचेती एवं करणीदान रांका ने किया। मुनि अजितकुमार जी एवं अन्य संतों के भक्ति गीत तथा साध्वी अनुशासनश्रीजी के गीत का गायक मंडली ने संगान किया।

मुनि श्रेयांसकुमार जी ने सभी संतों के सहयोग हेतु कृतज्ञता प्रकट की। मुनि विमलविहारी जी, मुनि प्रबोधकुमार जी एवं मुनि नमिकुमार जी ने भी अनुमोदना की। मुनि कमलकुमार जी ने आगे कहा कि 'आज मुनि नमिकुमार जी के जन्म का 76वां वर्ष प्रारंभ हो रहा है।

उन्होंने भी गंगाशहर प्रवास में तपस्या का नया कीर्तिमान रचा है — 22, 23, 24, 39, 40 उपवासों के पश्चात अब 14 दिन की नई तपस्या आरंभ हुई है।' अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास एवं प्रत्याख्यान किए, जिसमें आसकरण माली ने 9 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

संबोधि

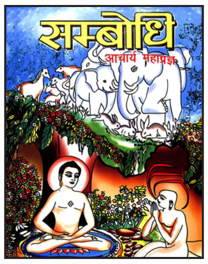

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

३२. अश्रद्धानं प्रवचने, परलाभस्य तर्कणम्।
आशंसनं च कामानां, स्नानादिप्रार्थनं तथा॥

३३. एतैश्च हेतुभिश्चित्तं, उच्चावचं प्रधारयन् ।
निर्ग्रन्थो घातमाप्नोति, दुःखशय्यां व्रजत्यपि ॥ (युग्मम्)

मुनि के लिए चार दुःख-शय्याएं हैं-१. निग्रंथ प्रवचन में अश्रद्धा करना। २. दूसरे श्रमणों द्वारा लाई हुई भिक्षा की चाह रखना। ३. काम-भोगों की इच्छा करना। ४. स्नान आदि की अभिलाषा करना। इन कारणों से साधु का चित्त अस्थिर बनता है और उसके संयम की हानि होती है, अतः निर्ग्रंथ के लिए ये चार दुःख-शय्याएं हैं।

३४. श्रद्धाशीलः प्रवचने, स्वलाभे तोषमाश्रितः।
अनाशंसा च कामानां, स्नानाद्यप्रार्थनं तथा॥

३५. एतैश्च हेतुभिश्चित्तं, उच्चावचमधारयन्।
निग्रंथो मुक्तिमाप्नोति, सुखशय्यां व्रजत्यपि॥ (युग्मम्)

मुनि के लिए चार सुख-शय्याएं हैं-१. निग्रंथ प्रवचन में श्रद्धा करना। २. भिक्षा में जो वस्तुएं प्राप्त हों, उन्हीं से संतुष्ट रहना । ३. काम-भोगों की इच्छा न करना। ४. स्नान आदि की इच्छा न करना। इन कारणों से साधु का चित्त स्थिर बनता है और वह मुक्ति को प्राप्त होता है, अतः निर्ग्रंथ के लिए ये चार सुख-शय्याएं हैं।

शय्या का अर्थ है-आश्रय स्थान। सुख और दुःख के चार-चार आश्रय-स्थान हैं। मुनि का मन संयम से विचलित होता है। उसके मुख्य कारण चार हैं : (१) संयम के प्रति अश्रद्धा, (२) श्रम से जी चुराना, (३) विषयों में आसक्ति, (४) श्रृंगार की भावना। ये चार दुःख के आश्रय-स्थान हैं।

मुनि के संयम में स्थिर रहने के चार कारण हैं : (१) संयम के प्रति श्रद्धा, (२) श्रमशीलता, (३) विषय-विरक्ति, (४) श्रृंगार-वर्जन। ये चार सुख के आश्रय-स्थान हैं।

३६. दुष्टा व्युद्ग्राहिता मूढा, दुःसंज्ञाप्या भवन्त्यमी।
सुसंज्ञाप्या भवन्त्यन्ये, विपरीता इतो जनाः॥

तीन प्रकार के व्यक्ति दुःसंज्ञाप्य होते हैं-दुष्ट, व्युद्ग्राहित-दुराग्रही और मूढ। इनसे भिन्न प्रकार के व्यक्ति सुसंज्ञाप्य होते हैं।

द्वेष करने वाले, दुराग्रही और मोहग्रस्त ये तीन प्रकार के व्यक्ति सज्ञान (शिक्षा) के लिए पात्र नहीं हैं। शिक्षा या सद्बुद्धि का अंकुर वहीं पल्लवित हो सकता है जहां अनाग्रह, नम्रता और सरलता है। द्विष्ट-चित्त वाला व्यक्ति अपने मन में ईर्ष्या, क्रोध, अभिमान, आग्रह आदि का पोषण करता है। वह अज्ञान और मोह से घिरा रहता है। मूढ़ मनुष्य को हिताहित का विवेक नहीं होता। भर्तृहरि ने मूढ़ और दुराग्रही के लिए यहां तक कहा है कि उन्हें ब्रह्मा भी रंजित नहीं कर सकते- 'अज्ञ व्यक्ति को समझाना सरल है। विद्वान् को समझाना सरलतम है किन्तु जो दोनों के बीच के अर्धपंडित हैं उन्हें ब्रह्मा भी नहीं समझा सकता।'

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री ओटांजी (कुशलपुरा) दीक्षा क्रमांक 183

साध्वीश्री ने संयम जीवन में अनेक तपस्याएं की। कुछ तपस्याओं का विवरण उपलब्ध है– सं. 1912 में 17, 1914 में 19, 1915 में मासखमण, 1916 में 18 का तप किया। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं है।

– साभार : शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

क्रान्ति का सिंहनाद

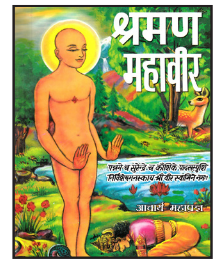

उनकी साधना में तप बहिरंग साधन है, ध्यान अंतरंग साधन। उनका साधनापथ न केवल तपस्या से निर्मित होता है और न केवल ध्यान से। वह दोनों के सामंजस्य से निर्मित होता है। तपस्या के स्थान पर तपस्या और ध्यान के स्थान पर ध्यान । दोनों का अपना-अपना उपयोग।

उस समय कुछ तपस्वी अज्ञानपूर्ण तप करते थे। वे लोहे के कांटों पर सो जाते। उनका शरीर रक्त-रंजित हो जाता। कुछ तपस्वी जेठ की गर्मी में पंचाग्नि-तप तपते और कुछ सर्दी के दिनों में नदी के गहरे पानी में खड़े रहते। भगवान् ने इनको बाल-तपस्वी और वर्तमान जीवन का शत्रु घोषित किया।

यदि कष्ट सहना ही धर्म होता तो लोहे के कांटों पर सोने वाला तपस्वी वर्तमान जीवन का शत्रु कैसे होता?

एक बार गौतम ने पूछा- 'भन्ते! क्या शरीर को कष्ट देना धर्म है?'

'नहीं कह सकता कि वह धर्म है।'

'भंते ! तो क्या वह अधर्म है?'

'नहीं कह सकता कि वह अधर्म है।'

'तो क्या है, भन्ते?'

'रोगी कड़वी दवा पी रहा है। क्या मैं कहूं कि वह अनिष्ट कर रहा है? ज्वर से पीड़ित मनुष्य स्निग्ध-मधुर भोजन खा रहा है। क्या मैं कहूं कि वह इष्ट कर रहा है?'

'दवा रोग की चिकित्सा है। मीठी दवा लेने से रोग मिटे तो कड़वी दवा लेना आवश्यक नहीं है। उससे न मिटे तो कड़वी दवा भी लेनी होती है।'

'स्निग्ध भोजन शरीर को पुष्ट करता है, पर ज्वर में वह शरीर को क्षीण करता है।

'मैं शरीर को कष्ट देने को धर्म नहीं कहता हूं। मैं संस्कारों की शुद्धि को धर्म कहता हूं।'

गौतम ने फिर पूछा- 'भन्ते! क्या ऐसा हो सकता है?-

1. कष्ट महान् और शुद्धि भी महान्
2. कष्ट महान् और शुद्धि अल्प,
3. कष्ट अल्प और शुद्धि महान् ।
4. कष्ट अल्प और शुद्धि अल्प।'

भगवान् ने कहा- 'हो सकता है।'

गौतम ने पूछा- 'कैसे हो सकता है, भन्ते?'

भगवान् ने कहा-

1. उच्च भूमिका का तपस्वी महान् कष्ट को सहता है और उसकी शुद्धि भी महान् होती है।
2. नारकीय जीव महान् कष्ट को सहता है, पर उसके शुद्धि अल्प होती है।
3. उच्च भूमिका का ध्यानी अल्प कष्ट को सहता है पर उसके शुद्धि महान् होती है।
4. सर्वोच्च देव अल्प कष्ट को सहता है और उसके शुद्धि भी अल्प होती है।'

भगवान् ने कष्ट-सहन और शुद्धि के अनुबंध का प्रतिपादन नहीं किया। भगवान् ने गौतम के एक प्रश्न के उत्तर में कहा था-कष्ट के अधिक या अल्प होने का मेरी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं है। मेरी दृष्टि में मूल्य है प्रशस्त शुद्धि का।

गौतम ने इस विषय को और अधिक स्पष्ट करने का अनुरोध किया। तब भगवान् ने कहा-

'गौतम! दो वस्त्र हैं-एक कर्दमराग से रक्त और दूसरा खंजनराग से रक्त। इनमें से कौन-सा वस्त्र कठिनाई से साफ होता है और कौन-सा सरलता से?'

'भन्ते ! कर्दमराग से रक्त वस्त्र कठिनाई से साफ होता है।'

'गौतम ! नारकीय जीव के बन्धन बहुत प्रगाढ़ होते हैं, इसलिए महान् कष्ट सहने पर भी उनके शुद्धि अल्प होती है।' '

भन्ते! खंजनराग से रक्त वस्त्र सरलता से साफ होता है।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समाज-सुधार के सूत्रधार : गुरुदेव श्री तुलसी

'ओह! तब तो मुझे भी नहीं बोलना चाहिए था।' बिड़लाजी ने कहा!

स्वीकृत नियम के पालन की यह जागरूकता औरों के लिए भी प्रेरणाप्रद है।

आत्मसंयम का तीसरा रूप है- संवेग नियंत्रण की क्षमता

धीर की परिभाषा है- '**विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः**- विकार का कारण उपस्थित हो जाने पर भी जिसका मन विकारयुक्त नहीं बनता, उत्तेजना की स्थिति में भी जो उत्तेजित नहीं होता, वह धीर कहलाता है।

उस समय आचार्यश्री तुलसी की अवस्था २३ वर्ष की थी। बीकानेर का चातुर्मासिक प्रवास सम्पन्न कर वे विशाल जनसमूह के साथ वहां से प्रस्थान कर रहे थे। सामने से एक दूसरा जुलूस भी आता हुआ दिखाई दिया। लग रहा था कि वह भिड़ंत के उद्देश्य से आ रहा है। उसके इस रवैये को देखकर आचार्यप्रवर के जनसमूह में भी कुछ उत्तेजना जागी। आचार्यश्री ने स्वयं एक तरफ होते हुए अपने अनुयायियों को भी एक तरफ हो जाने का और शांति बनाए रखने का निर्देश दिया। सामने वाला जुलूस निकल गया। कोई संघर्ष की स्थिति पैदा ही नहीं हो सकी।

आचार्यप्रवर के उस गंभीरतापूर्ण एवं शांतिपूर्ण निर्णय की बीकानेर शहर में अच्छी प्रतिक्रिया हुई। बीकानेर के तत्कालीन महाराजा गंगासिंहजी को जब उक्त घटना को जानकारी मिली तो उन्होंने नवयुवक आचार्यश्री तुलसी की प्रौढ़ता एवं गंभीरता की प्रशंसा की। गुरुवर विरोध को भी विनोद में परिणत करने की प्रेरणा दिया करते हैं। उनका यह जीवनसूत्र बन गया।

जो हमारा हो विरोध।
हम उसे समझें विनोद।।

पूज्यश्री ने खाद्य संयम, एकान्तवास, मौन, ध्यान, जप आदि के प्रयोगों के द्वारा आत्म-संयम को बहुत पुष्ट किया है।

पदयात्रा

पदयात्रा जैन मुनि का जीवन-व्रत है। इसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि में जहां अहिंसा का दृष्टिकोण रहा है, वहीं जन-सम्पर्क और जन-कल्याण की बात भी सहज ही इसके साथ जुड़ जाती है। यह अलग बात है कि पदयात्रा के प्राचीन और आधुनिक संदर्भ में अन्तर आया है। परिस्थितियां उस पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करती हैं। उसकी महती उपयोगिता पर प्रश्नचिह लगा है। फिर भी अब तक प्रायः जैन साधु- समाज पदयात्रा के पथ पर अग्रसर है। पदयात्रा बहिर्यात्रा है। हमारे जीवन में बहिर्यात्रा से ज्यादा मूल्य होता है अन्तर्यात्रा का।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी जैन धर्म के एक प्रभावशाली एवं प्रमुख आचार्य हैं। इससे भी पहले वे भारतीय ऋषि परम्परा के एक महान संत हैं। उनकी पदयात्रा का परिमाण भी बहुत लम्बा है। पंजाब से कन्याकुमारी (दक्षिण भारत) तक उन्होंने ससंघ पादविहार किया है। अपने जीवन काल में पदयात्रा कर उन्होंने जन-जन तक नैतिकता, चरित्र और अहिंसा का संदेश पहुंचाया है।

सामाजिक कुरूढ़ियों का उन्मूलन

जो समाज रूढ़िगत और मिथ्या विश्वासों की जंजीरों से जकड़ा हुआ होता है, जिस समाज के नेता उसके विकास और परिष्कार के लिए चिन्तनरत नहीं रहते, वह समाज पस्त समाज नहीं समज बन जाता है। संस्कृत साहित्यकारों ने अपने साहित्य में दो शब्दों का प्रयोग किया है- समाज और समज। उन्होंने, लिखा-समजस्तु पशूनां स्यात् समाजस्त्वन्यदेहिनाम्। पशुओं के समूह को उन्होंने 'समज' संज्ञा से अभिहित किया और मनुष्य आदि प्राणियों के समूह को 'समाज' संज्ञा से। शारीरिक आकार-प्रकार ही पशु और मनुष्य की भिन्नता प्रदर्शित नहीं करते, कृत्याकृत्य-विवेक भी इनको भिन्नता का बहुत बड़ा नियामक तत्त्व है।

बीजारोहण

एक बार परम श्रद्धेय आचार्यचरण अजमेर नगर में प्रवास कर रहे थे। एक दिन आप किसी मार्ग से गुजर रहे थे। मुनि-मण्डली के सिवाय कुछ भाई-बहन भी आपके सहभागी थे। उनमें कुछ विधवा महिलाएं भी सम्मिलित थीं। पति-विरहित स्त्रियां दो तरह के परिधान में बंटी हुई थीं। कुछ काले वस्त्र पहने हुए और कुछ सादे वेश में आवृत। सामने से एक घुड़सवार आ रहा था। ज्योंही उसकी दृष्टि उन कृष्णाम्बरधारिणी औरतों पर पड़ी, तत्क्षण उसने अपने मुंह को ढका और घोड़ी को मोड़ लिया। उसने इसे अपशकुन समझा। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल
अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अक्टूबर 2025 सप्ताह के विशेष दिन

23 अक्टूबर
आचार्यश्री तुलसी का 112वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)

24 अक्टूबर
भगवान सुविधिनाथ केवलज्ञान कल्याणक

02 नवंबर
भगवान अरनाथ केवलज्ञान कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री गणेशमलजी (जसोल) दीक्षा क्रमांक 422

मुनिश्री ने बहुत तप किया। आपके तप की समग्र सूची इस प्रकार है– उपवास/1401, 2/47, 3/25, 4/3, 5/2, 6/1 कुल दिन 1598 जिनके 4 वर्ष 5 महीने 8 दिन होते हैं।

– साभार : शासन समुद्र –

अणुव्रत काव्य धारा का आयोजन

जयपुर।

राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के सशक्त अभियान अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से अणुविभा जयपुर केंद्र, मालवीय नगर, जयपुर में अणुव्रत काव्य धारा कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत समिति जयपुर द्वारा बहुश्रुत परिषद की सम्मानित सदस्या, 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में किया गया।

कार्यक्रम का विषय था — 'अणुव्रत की डोर, देश बने सिरमौर।' अणुव्रत काव्य धारा का उद्देश्य अणुव्रत के दर्शन और सिद्धांतों को काव्य पाठ के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करना है।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त 11 कवि, रचनाकार, लेखक एवं साहित्यकारों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं तथा अणुव्रत आचार संहिता के ग्यारह नियमों को काव्य रूप में अभिव्यक्त करने का सराहनीय प्रयास किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कनकश्रीजी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया। महिला मंडल, जयपुर शहर की सदस्याओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति जयपुर के अध्यक्ष विनोद बैद ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया, जिसे उपस्थित सभी सहभागियों ने दोहराया।

आमंत्रित अतिथियों का स्वागत अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष विमल गोलछा ने किया। उन्होंने बताया कि जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा प्रतिवर्ष काव्य धारा का आयोजन किया जाता है और इस क्रम में यह चौथी काव्य धारा है। रचनाकारों में डॉ. मधु भट्ट तेलंग, सोनू यशराज, ललित अकिंचन, सुभाषचंद्र शर्मा, डॉ. राधेश्याम भारतीय, डॉ. क्षिप्रा नत्थानी, अंशु हर्ष, रेनू शब्दमुखर, योगाचार्य डॉ. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' तथा डॉ. रेखा गुप्ता प्रमुख रूप से शामिल थे।

साध्वी मधुलेखा ने व्यसन-मुक्त जीवन पर साध्वी कनकश्री जी की एक सारगर्भित रचना का भावपूर्ण पाठ किया। इस अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा एवं अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने भी अपने विचार रखे। श्री नाहर ने अणुव्रत के विविध प्रकल्पों पर सारगर्भित जानकारी देते हुए अणुव्रत के नियमों को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डाला।

साध्वी कनकश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान चरित्र निर्माण के माध्यम से संभव है।

उन्होंने आगे कहा कि गुरुदेव तुलसी का महत्त्वपूर्ण अवदान 'अणुव्रत' युगों-युगों से मानवता की समस्याओं का समाधान समाहित किए हुए है। इसे अपनाकर जीवन को सफल एवं उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अणुव्रत के सिद्धांत किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं, बल्कि सार्वभौमिक हैं।

इससे पूर्व संयोजक पवन जैन ने आमंत्रित अतिथियों को साध्वी कनकश्री जी का परिचय प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के दौरान अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आयोजित शॉर्ट वीडियो कॉम्पिटीशन 2025 – 'प्रकृति के प्रहरी' में रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देने के लिए रिया व्यास को प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरूप प्रमाण पत्र एवं साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन समिति के उपाध्यक्ष पवन जैन ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा ने प्रस्तुत किया।

ज्योति पुंज मंत्र अनुष्ठान का आयोजन

यशवंतपुर।

साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद, यशवंतपुर द्वारा विजयादशमी के अवसर पर विशेष 'ज्योति पुंज मंत्र अनुष्ठान' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विक्रम दुगड़ एवं जितेंद्र घोषल के निर्देशन में तेरापंथ सभा भवन, यशवंतपुर में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ युवक परिषद, यशवंतपुर के निवर्तमान अध्यक्ष महावीर गन्ना ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी सोमयशा जी ने अपने उद्बोधन में जीवन में मंत्रों के महत्व को समझाते हुए विशिष्ट जप प्रारंभ करने के उचित समय पर प्रकाश डाला। साध्वी डॉ. सरलयशा जी ने दिशाशास्त्र की जानकारी दी तथा मंत्रोच्चार के समय आसन और दिशा के महत्व पर विस्तार से बताया। साध्वी ऋषिप्रभा जी ने मुद्राशास्त्र की जानकारी देते हुए विभिन्न मुद्राओं का अभ्यास करवाया।

मुख्य प्रशिक्षक विक्रम दुगड़ एवं जितेंद्र घोषल ने सरल ढंग से विभिन्न मंत्रों का अर्थ समझाते हुए अभ्यास करवाया और बताया कि मंत्र साधना जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। कार्यक्रम में अभातेयुप सरगम के राष्ट्रीय सह-प्रभारी विशाल पितलिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष धर्मेश डुंगरवाल, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया एवं टीम, महिला मंडल अध्यक्ष रेखा पितलिया एवं टीम, तेरापंथ ट्रस्ट गांधीनगर के निवर्तमान अध्यक्ष प्रकाश बाबेल सहित श्रावक समाज के अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। मंत्री अभिषेक पोखरणा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

उपसर्गहर स्तोत्र नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

आमेट।

तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में उपसर्गहर स्तोत्र नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन नवरात्रि के पावन पर्व पर किया गया। नौ दिनों तक जप अनुष्ठान प्रातः प्रवचन में और रात्रिकालीन अर्हत वंदना के पश्चात दोनों समय सुंदर जप कर्म के रूप में सम्पन्न हुआ। साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने कहा कि इस समय किया गया मंत्र-जप शीघ्र फलदायी होता है। उपसर्गहर स्तोत्र में भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति की गई है। इन मंत्रों का जप विघ्न-विनाशक एवं सिद्धि-दायक है। इस समय ग्रह-नक्षत्र की किरणें अनुकूल रहती हैं। इस साधना काल में एकासन, आयंबिल, नीवी एवं दस प्रत्याख्यान तप का पालन किया गया। अनुष्ठान में श्रावक-श्राविकाओं ने मंत्रों पर ध्यान साधना की। संस्थाओं के पदाधिकारियों उपस्थिति सराहनीय रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज़ पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002** पर व्हाट्सअप अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

स्वागत समारोह का आयोजन

शास्त्रीनगर, नई दिल्ली।

स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए शासनश्री साध्वी सुव्रतां जी ने कहा— 'अतिथि का स्वागत मनुहारों से होता है, चंद्रमा का स्वागत सितारों से होता है, परंतु संत ऐसी दिव्य हस्ती हैं जिनका स्वागत त्याग और तपस्या की बहारों से होता है। भारतीय संस्कृति में संत परंपरा को सर्वोच्च सम्मान दिया गया है।

कहा गया है— संत संसार की सर्वोत्तम निधि हैं, संस्कृति के प्राण हैं, चलते-फिरते तीर्थ हैं और धरती के कल्पवृक्ष हैं। उनके सान्निध्य से परंपरा, इतिहास और दर्शन का सजीव ज्ञान प्राप्त होता है। उनके संपर्क में आकर अज्ञानी ज्ञानी बनता है, पापी धर्मात्मा में परिवर्तित हो जाता है, और सुप्त चेतना जागृत हो उठती है। भगवान की वाणी से चंडकोशिया शांत हुआ, प्रतिदिन सात व्यक्तियों की हत्या करने वाला अर्जुन माली संत बन गया।'

'शासनश्री 'साध्वी सुमनप्रभा जी ने भी अपने प्रेरक विचार रखे। इस अवसर पर महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, तेरापंथ सभा पीतमपुरा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत भुतोड़िया, मध्य दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा कनक चौपड़ा, शालीमार बाग सभा की अध्यक्षा सज्जन बाई गिड़िया, सभा के पूर्व अध्यक्ष संजय सुराणा, युवक परिषद के उपाध्यक्ष सौरभ, अणुव्रत ट्रस्ट के सहमंत्री प्रवीण बैद, तथा कन्यामंडल की प्रतिनिधियों ने अपने भाव व्यक्त किए। संचालन सभा मंत्री प्रवीण गोलछा ने किया।

कर्म निर्जरा का अमोघ साधन है तप

पूर्वांचल, कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में मीना सुराणा के मासखमण तप अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कोलकाता - पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया। उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - भगवान महावीर ने दान, शील, तप भावना को मुक्ति का द्वार बताया है। तप से आत्मा परिशुद्ध होती है।

तप कर्म निर्जरा का अमोघ साधन है। तप वह रसायन है जिसके द्वारा शरीर और मन का संतुलन बना रखता है। रसनेन्द्रिय के संयम से ऊर्जा का संचय होता है, विषय तृष्णा के कडे ताप शांत होते है। वृत्तिशोधन के साथ शरीर की अनेक बीमारियां से मुक्त होकर स्वस्थता व समाधि की अनुभूति करता है। तप के द्वारा हाथों की रेखा को बदला जा सकता है।

मुनिश्री ने आगे कहा - वृहत्तर कोलकाता में तप का अच्छा माहौल बना हुआ है। इस प्रवास में अब तक कुल 11 एवं लिलुआ का तीसरा मासखमण आया है। मीना देवी सुराणा ने हिम्मत का परिचय दिया है।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन परामर्शक सुशील हीरावत ने व तप अभिनंदन पत्र का वाचन उपाध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़ ने किया। तेरापंथी सभा पूर्वांचल के अध्यक्ष संजय सिंघी ने 'कृतज्ञोस्मि यात्रा' के बारे में बताते हुए तप अनुमोदना में विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर लिलुआ सभा सदस्य द्वारा तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया गया। नरेंद्र सुराणा व तपस्विनी के पारिवारिक बच्चों ने अपने भाव व्यक्त किये।

कलकत्ता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली एवं प्रेक्षा फाउंडेशन की ईस्ट जोन कोर्डिनेटर मंजू सिपानी ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर मासखमण तपस्विनी मीना सुराणा, 15 की तपस्या करने वाली सुमन लुणिया व अट्ठाई तप करने वाले राजेश दुगड़ को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। सभा द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया गया।

पृष्ठ 1 का शेष

आसक्ति के धागे...

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने अपने दीक्षा दिवस के अवसर पर कहा कि लगभग तेरह वर्ष पूर्व उन्हें आचार्यश्री महाश्रमणजी के करकमलों से दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री की शिक्षाएं उनके संयम जीवन का आधार हैं। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना के माध्यम से आत्मकल्याण और संघसेवा का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी एवं साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी को उनके दीक्षा दिवस पर मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी को उनके दीक्षा के 75 वर्ष पूर्ण होने पर शुभाशीष प्रदान किया।

आचार्यश्री की पावन सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की नवनिर्वाचित टीम का शपथ ग्रहण समारोह भी संपन्न हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष रमेश डागा ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति देकर नवनिर्वाचित अध्यक्ष पवन मांडोत को शपथ दिलाई। नव मनोनीत अध्यक्ष पवन मांडोत ने आचार्य प्रवर के समक्ष अपनी कार्य योजना प्रस्तुत करते हुए, अपनी टीम की घोषणा की एवं उन्हें शपथ ग्रहण करवाई। पूज्य प्रवर ने सभी को मंगल आशीष प्रदान करवाया।

दुःख और भय से...

प्राणी दुःख भी भोगता है और भयभीत भी होता है। किसी को अपमान का भय, किसी को हानि का भय, तो किसी को प्राणों का भय सताता है। देव गति के जीवों को भी भय की अनुभूति हो सकती है। भय के अनेक रूप हैं — किसी व्यक्ति, स्थान, स्थिति या अनुभव से उत्पन्न हो सकते हैं।

उन्होंने कहा कि व्यक्ति को किसी के प्रति वैरभाव नहीं रखना चाहिए। दूसरे को दुःख या हानि पहुंचाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। जब मनुष्य अपने भीतर अहिंसक चेतना का विकास करता है, तब उसके जीवन में भय मिटता है और शांति का संचार होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अहिंसा की चेतना जागृत कर, अभय की आराधना और साधना करनी चाहिए। मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर की ओर से दीपक आंचलिया ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पृष्ठ 10 का शेष

अध्यात्म की साधना के...

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी इससे जुड़े हुए थे। जीवन विज्ञान मानो जीवन का विज्ञान है — कैसे जीवन जीना, कैसा श्वास लेना, कैसे बोलना आदि जीवन से जुड़ी बातें जीवन विज्ञान से सीखने को प्राप्त हो सकती हैं। विद्यार्थियों को भी अच्छी शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार देने का प्रयास होना चाहिए। विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावनात्मक विकास का भी होना बहुत आवश्यक है। इस चतुष्कोणीय विकास के द्वारा विद्यार्थी के जीवन को उन्नत बनाया जा सकता है। आदमी को अपने जीवन को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए। विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार, नैतिकता आदि आएं। स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय आदि में जीवन विज्ञान का आयोजन कर विद्यार्थियों के जीवन का कल्याण किया जा सकता है। बाल व विद्यार्थी पीढ़ी का लंबा भविष्य है। उनका जीवन कैसे अच्छा बने, इसका प्रयास जीवन विज्ञान के माध्यम से किया जा सकता है। विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा और प्रेरणा मिले तो वे विपथ से बच सकते हैं। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी इस विषय में अच्छा ध्यान दे सकती है।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अहमदाबाद की मेयर प्रतिभा जैन उपस्थित हुईं और अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी। नरेश सालेचा ने अणुव्रत उद्बोधन के संबंध में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अणुविभा द्वारा प्यारचंद मेहता को जीवन विज्ञान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री मेहता ने आचार्यश्री के समक्ष कृतज्ञता के भाव अभिव्यक्त किए। आचार्यश्री ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस उपक्रम का संचालन अणुविभा के महामंत्री मनोज सिंघवी ने किया।

बोलती किताब

पथ चुनें पर कौन-सा

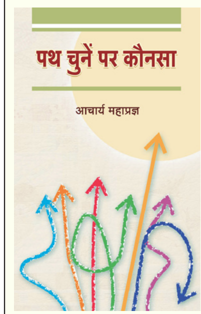

जीवन में अपने आपको जानने के अवसर बहुत कम आते हैं। कभी-कभी मौका मिलता है जब व्यक्ति अपने आपको जानने का प्रयत्न करता है। इसीलिए प्रेक्षाध्यान का मूल सूत्र रहा —'संपिक्खए अप्पगमप्पएणं' आत्मा के द्वारा आत्मा को देखो। दूसरों को देखना तो सहज सरल है, प्रकृतिसिद्ध है। दुर्वचन के कांटों को सहन करना कठिन होता है। अनेक व्यक्ति दूसरे की बात को तो सहन कर लेते हैं पर अपने साथ रहने वाला कुछ कह दे तो सहन नहीं होता। एक परिवार में पांच लोग साथ रहते हैं। उनमें से कोई कुछ कह दे तो भयंकर स्थिति बन जाती है। यदि व्यक्ति दुर्वचन को सहन करता हैं तो मानना चाहिए—यह मन्द कषाय वाला व्यक्ति है।

यह सुख और दुःख का चक्र चलता है पदार्थ के जगत् में। जहां वस्तु के साथ सम्बन्ध जोड़ा, वहां कभी सुख कभी दुःख होगा। अनुकूल वस्तु मिली, सुख हो गया। उसका वियोग हुआ, दुःख हो गया। जहां पदार्थ के साथ हमारा सम्बन्ध है वहां सुख और दुःख का चक्र चलेगा। जहां हमारा सम्बन्ध केवल अपनी आत्मा के साथ हो गया, बस न कुछ बाहर से लेना, न देना, न निन्दा, न प्रशंसा, न सम्मान, न अपमान, न लाभ, न अलाभ —कुछ भी नहीं, बस केवल आत्मा का अनुभव और ध्यान। वह सदा सुखी रहता है। उसके सुख में कभी कोई बाधा नहीं आती, विघ्न नहीं आता। यह सदा आनन्द का जो परिणाम है, हमारी चेतना की धारा है, वह पद्मलेश्या से प्राप्त होती है। जो व्यक्ति पद्मलेश्या में रहता है, उसमें यह स्थिति बनती है। यह बहुत सूक्ष्म धारा है।

जो व्यक्ति दूसरों की बात सुन कर उलझ जाता है, वह कभी सुख-शांति से रह नहीं सकता। इसलिए उपेक्षा को समझना बहुत जरूरी है। यदि आप शांति से रहना चाहते हैं, यदि आप पारिवारिक झगड़ों, कलहों से मुक्त रहना चाहते हैं, यदि संस्थागत संगठनात्मक झगड़ों से मुक्त रहना चाहते हैं तो सबसे अच्छा उपाय है— उपेक्षा करना सीखो, औदासीन्य का पाठ पढ़ो, मध्यस्थ रहना सीखो। इससे काफी समस्या हल हो जाएगी। जो सचमुच उपेक्षा करना जानता है, वह न कभी गुस्से में आता है, न झल्लाता है, न गालियां बकता है। कुछ भी नहीं करता। वह अपने व्यवहार से ऋणात्मक को धनात्मक बना देता है, नकारात्मक को सकारात्मक बना देता है।

जो गुस्से का निमित्त मिलने पर भी कभी गुस्सा नहीं करता, जिसमें त्याग की भावना है यानी संपत्ति आदि को छोड़ने की भावना है, सर्वस्व समर्पण की भावना है, अपने ईष्ट के प्रति समर्पण की भावना है, जो तनाव में नहीं रहता, अशांति में नहीं जीता, अशुद्ध भावों में नहीं रहता तो मानना चाहिए उसमें दैवीय संपदा का विकास हुआ है। जो चुगली नहीं करता, जिसके मन में प्राणियों के प्रति दया है, करुणा है, अनुकम्पा है, दीन दुःखियों को चित्तसमाधि पहुंचाने की भावना है, जो अनासक्त है, जिसमें मृदुता है, कोमलता है, जो अहंकार-शून्य है, वह दैवीय शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति होता है। जिसके जीवन में लज्जा है, उसके जीवन में अनेक बुराइयां तो आ ही नहीं सकती। अनुशासनबद्धता लज्जा का ही एक प्रकार है। जिसके जीवन में अनुशासन हो और चपलता न हो तो मानना चाहिए उस व्यक्ति में दैवीय संपदा का विकास हुआ है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

गुरु दर्शन यात्रा सम्पन्न

गोरेगांव, मुंबई।

मुनि कुलदीप कुमार जी की प्रेरणा से श्रावक समाज गुरु दर्शन के लिए संघ लेकर गुरु चरणों में पहुंचा। सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी ने सामूहिक खमत खामणा का क्रम सम्पादित किया।

वरिष्ठ श्रावक हस्तीमल राठौड़ ने समाज की गतिविधियों की जानकारी श्री चरणों में प्रेषित करते हुए मुनि कुलदीप कुमारजी के चातुर्मास में हुई तपस्या एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्रदान दी।

महिला मंडल अध्यक्ष डिंपल हिरण ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

गुरुदेव ने चातुर्मास का लाभ लेने एवं संघ की सेवा करने की प्रेरणा दी। सदस्यों ने मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी की भी सेवा उपासना कर प्रेरणा प्राप्त की। इस संघ को सफल बनाने में सभा कोषाध्यक्ष पारस सांखला एवं सभा, युवक परिषद्, महिला मंडल, ज्ञान शाला परिवार, कन्या मंडल एवं पूरे समाज से सराहनीय सहभागिता एवं सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 अक्टूबर - 26 अक्टूबर, 2025

प्रज्ञा के साथ जुड़ जाए राग द्वेष मुक्तता : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
06 अक्टूबर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि दुनिया में प्रज्ञावान पुरुष भी मिल सकते हैं और अनात्मप्रज्ञ व्यक्ति भी हो सकते हैं। जिनमें प्रज्ञा का अच्छा जागरण हो गया है, संयम के प्रति निष्ठा पुष्ट हो गई है, ऐसे साधु-साध्वियां संयम का अच्छा पालन करने में सफल हो सकते हैं। जिनमें प्रज्ञा नहीं, विवेक नहीं और संयम के प्रति निष्ठा नहीं, जागरूकता नहीं, ऐसे साधु भी अवसाद को प्राप्त हो सकते हैं, कुछ अंशों में चित्त समाधि से रहित रह सकते हैं।

प्रज्ञा एक ऐसा तत्त्व है, जिसे हम ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के रूप में संबद्ध देख सकते हैं। अतीन्द्रिय ज्ञान जैसे अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान भी ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से होता है। मात्र एक केवल ज्ञान ऐसा है, जो पांच ज्ञानों में ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से प्राप्त होता है। क्षयोपशम और क्षय का मार्ग एक ही है — मंजिल तक पहुंच गए तो क्षय, और मार्ग में रह गए तो क्षयोपशम है। अपूर्णता क्षयोपशम है और पूर्णता क्षय है। प्रज्ञा के साथ राग-द्वेष मुक्तता, विवेक चेतना जुड़ जाए और चारित्र मोह का क्षयोपशम जुड़ जाए तो संयम जीवन का अच्छा पालन हो सकता है।

आज आश्विन शुक्ला चतुर्दशी है और प्रज्ञा पुरुष श्रीमद् जयाचार्य का जन्म दिवस है। जैन श्वेतांबर तेरापंथ के आद्य आचार्य आचार्यश्री भिक्षु हुए। उनका जीवनकाल लगभग 77-78 वर्षों का रहा। आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी वि.सं. 1860 को हुआ। उनके देहावसान के लगभग एक माह पश्चात् आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को श्रीमद् जयाचार्य प्रकट हुए। 10 वर्ष की आयु पूर्ण होने से पूर्व ही वे मुनि बन गए। आगे चलकर अग्रणी और युवाचार्य बने तथा लगभग 48 वर्ष की उम्र में वे आचार्य बने। वे चतुर्थ आचार्य बने। उन्हें 'प्रज्ञा पुरुष' कहा गया है। उनके ग्रंथों को पढ़ने से लगता है कि उनमें श्रुत प्रगाढ़ मात्रा में था, बहुश्रुत थे, ज्ञान में गहराई थी और प्रखर तार्किक क्षमता थी। उनका राजस्थानी भाषा में साहित्य उपलब्ध होता है। सबसे बड़े आगम 'भगवती' का राजस्थानी भाषा में उन्होंने 'भगवती जोड़' ग्रंथ लिखा है, जो राग-रागिनियों से युक्त है। इसके अलावा उन्होंने तत्त्व, सिद्धांत पर अनेक ग्रंथ, भक्ति पर चौबीसी, आराधना, प्रश्नोत्तर तत्त्व बोध, झीणी चर्चा आदि ग्रंथ रचे थे। वे हमारे धर्म संघ को सुंदर, व्यवस्थित अनुशासन प्रदान करने वाले आचार्य थे।

गुरु के अनुशासन के प्रति जागरूक रहना चाहिए। जो भी जिनके अधीनत्व में हो, उसका अनुशासन पालन करने का प्रयास करना चाहिए। दूसरों पर अनुशासन करने से पहले स्वयं पर ही अनुशासन करने का प्रयास करना चाहिए। श्रीमद् जयाचार्य अनुशासन करने वाले भी थे और व्यवस्था में कुछ परिवर्तन करने वाले भी थे।

मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें अनुकूल या प्रतिकूल जैसी भी परिस्थितियां मिलें, उनमें शांत रहना चाहिए। कुछ बातों को जीवन में उतार कर हम शांत रह सकते हैं। पहली बात है कि हमें अपने स्वभाव का परिष्कार करना चाहिए। अपनी कमियों को पहचान कर उन्हें दूर करना होगा। दूसरा — हमें अपने जीवन में प्रतिक्रिया-विरति की साधना करनी चाहिए। तीसरा — हमें हमेशा सकारात्मक और वास्तविक चिंतन करना चाहिए। इनसे हम अपने जीवन में शांति प्राप्त कर सकते हैं।

मंगल प्रवचन के उपरांत चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी का उपक्रम संपादित हुआ। आचार्यवर ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों व समणियों को मंगल प्रेरणा प्रदान की। आचार्यश्री ने बोथरा परिवार को आध्यात्मिक संबल प्रदान किया।

अणुव्रत लेखक सम्मेलन में प्रसिद्ध लेखक कुमारपालभाई देसाई ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अनुल लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर संकोटलालभाई ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यप्रवर ने मंगल पाथेय प्रदान किया। विजयनगर, बैंगलोर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अध्यात्म की साधना के द्वारा हो सकती है अंधकार से प्रकाश की ओर गति : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
07 अक्टूबर, 2025

अध्यात्म जगत के महासूर्य, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने वीर भिक्षु समवसरण में अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि सृष्टि में दो प्रकार के जीव होते हैं — एक सिद्ध और दूसरे संसारी। सिद्ध जीव मोक्ष में पहुंच चुके हैं। वे जन्म-मरण की परंपरा से मुक्त हैं। उनमें शरीर, मन और वाणी कुछ भी नहीं है। शरीर-सापेक्ष कोई भी अवयव और प्रवृत्ति सिद्धों के नहीं है। वे केवल ज्ञान और केवल दर्शन से संपन्न हैं और परम सुख की स्थिति में हैं। सिद्ध जीव अनंत हैं।

जीवों का दूसरा प्रकार संसारी जीव है। संसारी जीव जन्म-मरण की परंपरा से युक्त होते हैं। संसारी जीव चार गतियों में हैं — नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गति। इन जीवों का जन्म-मरण इन्हीं चार गतियों में होता रहता है और जब कभी ये जीव केवल ज्ञान को प्राप्त होंगे, उसी जीवन के बाद मोक्ष में चले जाएंगे। चार गतियों में चौरासी लाख जीव योनियां हैं। इनमें एक मनुष्य योनि भी है, और हम सब संज्ञी मनुष्य हैं। दूसरे प्रकार के मनुष्य असंज्ञी मनुष्य भी होते हैं, जो सामान्यतः हमें दिखाई नहीं देते। उनके भी पांच इंद्रियां होती हैं, परंतु मन नहीं होता। वे संज्ञी मनुष्यों के मल-मूत्र आदि में उत्पन्न होते हैं। हम सभी संज्ञी मनुष्य हैं, और यह मनुष्य जीवन दुर्लभ भी है और महत्त्वपूर्ण भी है। मनुष्यों में कुछ मनुष्य अधम कोटि के हो सकते हैं। वे इतना पाप कर्म कर लेते हैं कि नरक में भी सबसे निकृष्ट स्थान, अर्थात सातवीं नरक में, पैदा हो सकते हैं। मनुष्यों में ही कुछ इतने श्रेष्ठ होते हैं कि मोक्ष में चले जाते हैं। इस प्रकार संसार में संज्ञी मनुष्य अधम प्राणी भी हो सकते हैं और सर्वोत्कृष्ट प्राणी भी हो सकते हैं। आदमी के भीतर हिंसा के संस्कार, असत् संस्कार भी हैं और अंधकार भी है। अध्यात्म की साधना के द्वारा अंधकार से प्रकाश की ओर, असत् से सत् की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर गति हो सकती है। जो व्यक्ति साधु न बन सके, साधना न कर सके, वह अच्छा आदमी बनने का प्रयास करे। अच्छा आदमी बनने के लिए बच्चों को शिक्षा के साथ ही कुछ ऐसी चीजें दी जानी चाहिए, जिससे उनमें अच्छे संस्कारों का बीजारोपण हो सके।

आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का सातवां और अंतिम दिवस है। आज का यह दिवस जीवन विज्ञान दिवस है। एक अक्टूबर से प्रारंभ हुआ यह सप्ताह अपने शिखर पर पहुंच गया है। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के समय अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान प्रारंभ हुए। (शेष पेज 9 पर)

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

स्वतंत्रता का मूल्य

आचार्य भिक्षु आज्ञा और स्वतंत्रता– दोनों की सीमा को जानते थे। आज्ञा का अपना क्षेत्र होता है और स्वतंत्रता का अपना। आज्ञा के क्षेत्र में स्वतंत्रता और स्वतंत्रता के क्षेत्र में आज्ञा के प्रयोग से दोनों का प्रभाव कम होता है।

आचार्य भिक्षु ने आचार और व्यवहार के क्षेत्र में आज्ञा को महत्त्व दिया और विचार-चिन्तन के क्षेत्र में स्वतंत्रता को महत्त्व दिया। मर्यादा के विषय में चिन्तन की स्वतंत्रता को महत्त्व देते हुए उन्होंने कहा– ''ऋष भीखण सर्व साधां ने पूछनै सर्व साधु-साधवियां री मरजादा बांधी। ते साधां ने पूछनै साधां कनां थी कहिवाय नै ए सर्व साधां रा परिणाम जोयनै रजाबंध करने यां कनां सू पिण जुदो-जुदो कहवाय नै मरजादा बांधी छै।

जिणरा परिणाम मांहिला चोखा हुवै ते मतो घालजो, कोई सरमासरमी रो काम छै नहीं। मूंढै और ने मन में और, इम तो साधु नै करवो छै नही, चरचा बोल किणनै छोडणो मेलणो... बुधवान् नै पूछनै करणो, सरधा रो बोल इत्यादिक। पण तिमहिज जाणवो।

कोई टोला रो साधु-साधवियां में साधपणो सरधो, आप मांहै साधपणौ सरधो तको टोला मांहै रहिजो।''

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

बारह व्रत-अपरिग्रह

चौरासी लाख जीव योनियों में मनुष्य ही सबसे समझदार, सबसे दुर्लभ और देवताओं को भी काम्य गति है। सम्भवतः मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो अपनी आने वाली सात पीढ़ियों के बारे में सोचता है और उनसे भी अधिक उनके लिए इकट्ठा करके रखता है। आश्चर्य की बात है कि जिसे पल का भरोसा नहीं, वही कल की चिंता में डूबा रहता है।

भगवान महावीर की अद्भुत देन– 'बारह व्रत'– में आज की आवश्यकता के अनुरूप एक अत्यंत प्रासंगिक व्रत है 'अपरिग्रह'। यह केवल वस्तुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति और विचारों से भी जुड़ा है। वस्तुओं को आवश्यकता से अधिक जमा करना या किसी व्यक्ति अथवा प्राणी के प्रति राग-द्वेष रूपी कर्म-कचरे को संचित करना भी परिग्रह की परिधि में आता है।

यदि हम और सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो हमारे भीतर अनावश्यक विचारों का संग्रह भी परिग्रह का ही रूप है। दसवैकालिक सूत्र में स्पष्ट कहा गया है– 'मुच्छा परिग्गहो वुत्तो'– अर्थात् मूर्छा (ममत्व या आसक्ति) को ही परिग्रह कहा गया है।

श्रावक को चाहिए कि वह अनावश्यक संग्रह से बचे और उससे भी महत्वपूर्ण यह है कि उसमें अनासक्त बना रहे। 'मेरा-मेरा' की भावना का विसर्जन करे। तभी वह इस व्रत की सच्ची और गहन आराधना कर पाएगा।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

त्याग को तोड़ने वाला कौन और पालने वाला कौन?

कुछ लोग कहते हैं– 'ये (शिथिलाचारी साधु) दोषों का सेवन करते हैं, फिर भी अपने से तो अच्छे हैं। ये सजीव जल नहीं पीते, स्त्री का सेवन नहीं करते।'

इस पर स्वामीजी ने दृष्टांत दिया– एक व्यक्ति ने तीन एकासन किए। प्रत्येक दिन उसने छह-छह रोटियां खाईं। एक व्यक्ति ने तेला (तीन दिन का उपवास) किया और प्रत्येक दिन आधी-आधी रोटी खाई। इन दोनों में त्याग तोड़ने वाला कौन और पालने वाला कौन? तेला करने वाले ने त्याग को तोड़ा और एकासन करने वाले ने त्याग का पूरा पालन किया।

इसी प्रकार गृहस्थ स्वीकार किए हुए व्रतों का सम्यक् पालन करता है, वह एकासन करने वाले जैसा है और जो साधुपन को स्वीकार कर दोषों का सेवन करता है वह तो तेले में रोटी खाने वाले जैसा है।

क्या आप जानते हैं?

दीपवाली के तेले की तपस्या का अंतिम दिन कार्तिक अमावस्या को आना चाहिए। यदि अमावस्या दो हो तो प्रथम अमावस्या को तेले का तीसरा दिन आना चाहिए।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह प्रतिदिन 'लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते' की एक माला फेरें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 अक्टूबर - 26 अक्टूबर, 2025

संवर और निर्जरा से संभव है मोक्ष : आचार्यश्री महाश्रमण

भारत की एक उभरती हुई संस्था लग रही है अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

कोबा, गांधीनगर।
11 अक्टूबर, 2025

युवा मनीषी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो आगम' के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि इस संसार में दुःख भी हैं और प्राणियों को नाना प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। जहाँ दुःख है, वहाँ उसका कारण भी है, और दुःख से मुक्ति के उपाय भी हैं। प्रतिकूल संवेदन ही दुःख का रूप है।

'जैन दर्शन में नव तत्त्व बताए गए हैं। उनमें से 'पाप तत्त्व' के उदय से प्राणी दुःख का अनुभव करता है। आठ कर्मों में से चार कर्म एकान्त पापात्मक हैं और शेष चार उभयात्मक अर्थात् पुण्य-पाप दोनों फल देने वाले हैं। इस प्रकार 'पाप' सभी कर्मों से किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ तत्त्व है। जीव के परिणामों से उत्पन्न आश्रव दुःख का कारण है। संसार में जन्म-मरण और दुःख का कारण आश्रव है, जबकि पुण्यजन्य सुख का कारण भी वही आश्रव है। अतः नव तत्त्वों में आश्रव को दुःख के मूल कारण के रूप में देखा जा सकता है।'

जीव को संपूर्ण दुःख-मुक्ति मिल सकती है, और उसी स्थिति को मोक्ष कहा गया है। मोक्षावस्था में शरीर, वाणी, मन, कल्पना, स्मृति आदि कुछ भी नहीं रहते। मोक्ष प्राप्ति का प्रमुख कारण संवर है, और निर्जरा तत्त्व के माध्यम से पूर्वार्जित कर्मों का क्षय होता है। संवर और निर्जरा से पूर्ण दुःख-मुक्ति अर्थात् मोक्ष संभव है।

संसार में सभी प्राणी विभिन्न रूपों में दुःख भोगते हैं। मनुष्य जीवन में शारीरिक समस्याओं के रूप में दुःख उत्पन्न हो सकता है। रोग-व्याधियों से व्यक्ति की सेवा, श्रम और साधना बाधित हो सकती है। इसलिए शास्त्र में कहा गया है — 'जब तक बुढ़ापा, व्याधि या इन्द्रिय-दुर्बलता न आए, तब तक धर्म का सम्यक् आचरण करो।' शरीर की सक्षमता, चित्त की प्रसन्नता और मनोबल — इन तीनों के संतुलन से व्यक्ति उत्तम परोपकार और साधना कर सकता है।

आचार्यश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष में हम उनके शरीर-बल, मनोबल और अध्यात्म-बल — तीनों का सुंदर संगम देख सकते हैं। आचार्यश्री तुलसी में भी शरीर-बल और कार्यशक्ति का अद्भुत मेल था, जिसका उन्होंने सदुपयोग किया। आचार्य महाप्रज्ञजी ने ज्ञान और साधना के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। युवावस्था में यदि व्यक्ति अपनी शक्ति का सदुपयोग करे तो वह महान कार्य कर सकता है।

मंगल प्रवचन के उपरांत समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का त्रिदिवसीय अधिवेशन भी आयोजित हुआ। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने विचार रखे तथा महामंत्री अमित नाहटा ने कार्यकाल की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके पश्चात् परिषद् सदस्यों ने अधिवेशन गीत का संगान किया।

इस संदर्भ में आचार्य प्रवर ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अधिवेशन का अवसर है। तेरापंथ समाज में अनेक केन्द्रीय संस्थाएं हैं उनमें युवाओं व किशोरों की संस्था अभातेयुप है। आगे योगक्षेम वर्ष आयोज्य है, इसमें युवक परिषद् के इतिहास और पृष्ठभूमि पर आधारित कोई सामग्री तैयार की जा सकती है। अभातेयुप का कोई चिंतन शिविर लगे कि क्या नया उन्मेष लाया जा सकता है? अभातेयुप द्वारा अनेक कार्य किए जा रहे हैं। अभातेयुप भारत की एक उभरती हुई संस्था लग रही है। रास्ते की सेवा आदि का अच्छा कार्य हो रहा है। किशोरों को सही राह पर चलाने का भी कार्य युवक परिषद् को करने का प्रयास करना चाहिए। अच्छा धार्मिक कार्य होता रहे।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।